अनुक्रमणिका

अ नु क्र म णि का

प्राक्कथन

अनुक्रमणिका

प्रथम अध्याय - ''शंकर पुणतांबेकर का व्यक्तित्व एवं कृतित्व'' **पृष्ठ** 1-24

प्रास्ताविक

1.1 जीवन परिचय

1.1.1 जन्म

1.1.2 माता-पिता

1.1.3 बचपन

1.1.4 शिक्षा

1.1.5 पारिवारिक जीवन

1.1.6 मित्र एवं परिचित

1.1.7 नौकरी

1.1.8 पुरस्कार एवं सम्मान

1.2 व्यक्तित्व

1.2.1 बहिरंग व्यक्तित्व

1.2.2 अंतरंग व्यक्तित्व

1.2.2.1 प्रेरक व्यक्तित्व

1.2.2.2 समय के पाबंद

1.2.2.3 स्थितप्रज्ञ स्वभाव

1.2.2.4 सामान्य से असामान्यत्व का दर्शन

1.2.2.5 प्रसिद्धि से दूर रहनेवाले

1.2.2.6 मिलनसार स्वभाव

1.2.2.7 कर्तव्यनिष्ठ

1.2.2.8 पारदर्शी व्यक्तित्व

1.2.2.9 एक उत्कृष्ट वक्ता

1.2.2.10 झूठी शान से दूर रहनेवाले

1.2.2.11 पाठकों के प्रति जागरूक

1.2.2.12 आस्थावादी

1.2.2.13 अतिथिपूजा में तत्पर

1.3 कृतित्व

1.3.1 व्यंग्येतर रचनाएँ

1.3.2 व्यंग्य रचनाएँ

1.3.2.1 पुणतांबेकर की कुछ रचनाओं का संक्षिप्त परिचय

1.3.2.2 अप्रकाशित रचनाएँ

1.3.3 संपादन

निष्कर्ष

द्वितीय अध्याय - ''हास्य-व्यंग्य का स्वरूप-विवेचन एवं विवेच्य एकांकियों के हास्य-व्यंग्य का स्वरूप'' 25-71

प्रास्ताविक

2.1 हास्य-व्यंग्य का उद्भव एवं विकास

2.2 हास्य का स्वरूप-विवेचन

2.2.1 हास्य रस का शास्त्रीय-विवेचन

2.2.1.1 हास्य का स्थायीभाव

2.2.1.2 हास्य के विभाव

2.2.1.3 हास्य के अनुभाव

2.2.1.4 हास्य के संचारीभाव

2.2.2 'हास्य' शब्द का अर्थ

2.2.3 हास्य की परिभाषा

2.2.3.1 संस्कृत आचार्योंद्वारा प्रस्तुत परिभाषाएँ

2.2.3.2 भारतीय चिंतकोंद्वारा प्रस्तुत परिभाषाएँ

2.2.3.3 पाश्चात्य विद्वानोंद्वारा प्रस्तुत परिभाषाएँ

2.2.4 हास्य के भेद

2.2.4.1 भारतीय आचार्योंद्वारा स्वीकृत भेद

2.3 व्यंग्य का स्वरूप-विवेचन

2.3.1 व्यंग्य का अर्थ

2.3.2 व्यंग्य की परिभाषा

2.3.2.1 भारतीय विद्वानों द्वारा प्रस्तुत परिभाषाएँ

2.3.2.2 पाश्चात्य् विद्वानों द्वारा प्रस्तुत परिभाषाएँ

2.3.3 व्यंग्य के प्रकार

2.3.3.1 चमत्कारिक व्यंग्य विनोद (Wit)

2.3.3.2 व्याजोक्ति (Irony)

2.3.3.3 उपहास (Sarcasm)

2.3.3.4 व्याकृति (Buslesque)

2.3.3.5 आक्षेप (Compoon)

2.4 हास्य-व्यंग्य का संबंध एवं पार्थक्य

2.4.1 हास्य और व्यंग्य दो अलग प्रवृत्तियाँ

2.4.2 हास्य और व्यंग्य के उद्देश्य में भिन्नता

2.4.3 परिणाम की दृष्टि से भिन्नता

2.5 एकांकी का उद्भव एवं विकास

2.5.1 'एकांकी' शब्द का अर्थ

2.5.2 उद्भव एवं विकास

2.6 विवेच्य एकांकियों के हास्य-व्यंग्य का स्वरूप

2.6.1 सामाजिक हास्य-व्यंग्य एकांकी

2.6.1.1 'बचाओ, मुझे डाक्टरों से बचाओ'

2.6.1.2 'अनोखेलाल को ऑफिस का चार्ज'

2.6.1.3 'रंग में भंग'

2.6.1.4 'इन्टरव्यू की तैयारी'

2.6.1.5 'अनोखेलाल का सेवाव्रत'

2.6.2 राजनीतिक हास्य-व्यंग्य एकांकी

2.6.2.1 'इन्टरव्यू : एक चुनाव के उम्मीदवार से'

2.6.2.2 'चूहें'

2.6.3 कौटुंबिक हास्य-व्यंग्य एकांकी

2.6.3.1 'तितली'

2.6.3.2 'नहाने के बहाने'

2.6.3.3 'अनोखेलाल ने नौकर रखा'

2.6.3.4 'अनोखेलाल बीमार पड़ते हैं'

2.6.3.5 'अनोखेलाल चांदनी रात में'

2.6.3.6 'अनोखेलाल खाना बनाते हैं'

2.6.3.7 'अनोखेलाल का विवाह दिन'

निष्कर्ष

तृतीय अध्याय - ''शंकर पुणतांबेकर के विवेच्य एकांकियों का कथ्य एवं शिल्प'' 72-110

प्रास्ताविक

3.1 कथ्य

3.1.1 'बचाओ, मुझे डाक्टरों से बचाओ' एकांकी में डॉक्टरों की पूँजीवादी वृत्ति का उद्‌घाटन

3.1.2 'तितली' - अतिआधुनिकता के प्रति आकर्षण पर प्रतीकात्मक व्यंग्य

3.1.3 'अनोखेलाल को ऑफिस का चार्ज' - मध्यवर्गीय मनुष्य की वृत्ति का चित्रण

3.1.4 'इन्टरव्यू : एक चुनाव के उम्मीदवार से' एकांकी में चुनाव व्यवस्था का खोखलापन

3.1.5 'रंग में भंग' एकांकी में युवकों की बदलती मानसिकता के दर्शन

3.1.6 'इन्टरव्यू की तैयारी' एकांकी में शिक्षण व्यवस्था की त्रासदी

3.1.7 'नहाने के बहाने' - हास्यात्मक व्यंग्य

3.1.8 'अनोखेलाल ने नौकर रखा' एकांकी में झूठी प्रतिष्ठा के दर्शन

3.1.9 'अनोखेलाल बीमार पड़ते हैं' - हास्यात्मक व्यंग्य

3.1.10 'अनोखेलाल का सेवाव्रत' - सामाजिक व्यंग्य

3.1.11 'अनोखेलाल चांदनी रात में' - कौटुंबिक हास्य-व्यंग्य

3.1.12 'चूहें' - नेताओं पर प्रतीकात्मक व्यंग्य

3.1.13 'अनोखेलाल खाना बनाते हैं' - हास्यात्मक व्यंग्य

3.1.14 'अनोखेलाल का विवाह दिन' - कौटुंबिक हास्य-व्यंग्य

3.2 विवेच्य एकांकी संग्रह की एकांकियों का शिल्प

3.2.1 भाषा शिल्प

3.2.1.1 संवाद शिल्प

3.2.1.2 अलंकारों का प्रयोग

3.2.2 रंगमंचीय निर्देश

3.2.3 अभिनय निर्देश

3.2.4 पात्र सृष्टि

3.2.5 विषय केंद्रिता

3.2.6 प्रतीक योजना

3.2.7 शीर्षक योजना

3.2.8 संकलन-त्रय एवं मंचीयता

निष्कर्ष

चतुर्थ अध्याय - ''शंकर पुणतांबेकर के विवेच्य एकांकियों के हास्य-व्यंग्य का मूल्यांकन'' 111-131

प्रास्ताविक

4.1 'मूल्यांकन' शब्द का अर्थ

4.1.1 राजनीतिक और प्रशासनिक क्षेत्र से संबंधित हास्य-व्यंग्य का मूल्यांकन

4.1.1.1 भ्रष्ट राजनीति

4.1.1.2 प्रजातंत्र की अव्यवस्था

4.1.1.3 नेता

4.1.1.4 भाषणबाजी तथा आश्वासन

4.1.1.5 अफसरशाही

4.1.1.6 कानून व्यवस्था तथा पुलिस

4.1.2 सामाजिक क्षेत्र से संबंधित हास्य-व्यंग्य का मूल्यांकन

4.1.2.1 स्वास्थ्य विभाग

4.1.2.2 आधुनिक जीवन में बिखरते परिवार

4.1.2.3 छात्र और अध्यापक के संबंध

4.1.2.4 शिक्षा जगत की त्रासदी

4.1.2.5 लोभ और शोषण की प्रवृत्ति

4.1.3 पारिवारिक समस्याओं, उलझनों, अभावों पर किए हास्य-व्यंग्य का मूल्यांकन

4.1.3.1 पति-पत्नी के बीच की अनबन

4.1.3.2 आर्थिक अभाव के कारण उत्पन्न हास्य-व्यंग्य

4.1.3.3 प्रतिष्ठा के झूठे प्रदर्शन और आपसी ईर्ष्या भाव

4.1.3.4 अनोखेलाल पात्र की मूर्खताओं द्वारा प्रस्तुत हास्य-व्यंग्य

निष्कर्ष

पंचम अध्याय - ''हास्य-व्यंग्य एकांकियों के क्षेत्र में शंकर पुणतांबेकर का योगदान'' 132-145

प्रास्ताविक

5.1 हिंदी एकांकी साहित्य और एकांकीकार

5.1.1 रामकुमार वर्मा

5.1.2 मोहन राकेश

5.1.3 उपेंद्रनाथ 'अश्क'

5.2 कथा-साहित्य पर आधारित एकांकी लेखन

5.2.1 हरिशंकर परसाई

5.2.2 श्रीलाल शुक्ल

5.2.3 गिरीश रास्तोगी

5.3 हास्य-व्यंग्य एकांकीकार शंकर पुणतांबेकर

निष्कर्ष

उपसंहार 146-152

परिशिष्ट 153-166

संदर्भ ग्रंथ-सूची 167-171

* * * *